प्रेस विज्ञप्ति

उदयपुर, 8 जून।

मीडिया शाश्वत मूल्यों की रक्षा करें-गौड़

डा. अब्दुल कलाम के कहे वाक्योंं को दोहराते हुए कहा कि समाज में जो परिस्थितियां मीडिया से पनप रही है, उससे उबरने के लिए भी मीडिया आवश्यक कदम उठाये। आज पत्रकारिता में भी तनाव पैदा हो रहा है उसका भी हल ढूढ़ना है, और समाज के कल्याण के बारे में सोचना है। मीडिया जातिवादी संरक्षण का भी शिकार हुआ है। समाज में एक नये प्रकार की प्रतिस्पर्धा पैदा हो गयी है कि अखबार 20 पेज का होने के बावजूद भी 2 रूपये में बिक रहे है। ये सिर्फ प्रतिस्पर्धा की ही देन है। इससे अखबार और उसमें कार्य करने वालों को भी तनाव पैदा हो रहा है।उक्त उदगार स्वदेश अखबार के प्रधान सम्पादक जयकृष्ण गौड़ ने व्यक्त किये वे ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग तथा सोसायटी आफ मीडिया इनिशियेटीव फार वैल्यूज, उदयपुर द्वारा आयोजित तनावमुक्त पत्रकारिता में उपस्थित स्थानीय मीडियाकर्मियों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने चिंता जाहिर करते हु कहा कि प्रतिस्पर्धात्मक दौड़ में अखबरों में प्रकाशित सामग्री से एक नेयी प्रकार की समस्यायें पैदा हो गयी है। कई इसके ज्वलंत और ताजी घटनायें इसका सबूत है। भारतीय संस्कृति और शैली इतनी शक्तिशाली और सकारात्मक है। आज पाश्चात्य देशों में लोग अब भौतिक जीवन से छटपटा रहे है और योग और ध्यान के तरफ बढ़ रहे है ताकि जीवन में मूल्यों का समावेश हो। आत्मचिंतन से जो शांति मिलती है उससे ही तनाव को दूर किया जा सकता है। आपके लिखने की सार्थकता तभी पूरी हो सकती है जब उसपर समाज में चिंतन चले।श्रेष्ठ समाज के निर्माण में सहायक शाश्वत मूल्यों की पुनर्स्थापना तथा रक्षा करें।समाज को दिशा में देने में हम अच्छे सामग्री प्रदान कर लोगों का मार्गदान प्रदान करें।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्व विद्यालय, भोपाल के पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर कमल दीक्षित ने कहा कि मीडिया के कन्टेट पर वो लोग प्रभावित है जो मानवीय सरोकारों के बजाए व्यावसायीकरण को महत्व देते है। प्रत्येक व्यवसायी के साथ एक शक्ति कार्य करती है जिसके सहारे सारा कार्य पूरा हो जाता है। इसलिए मानवीय सरोकारों को साथ रखना चाहिए। सत्यता, अभय और वास्तविकता के पक्ष में होकर कार्य करें तो कभी तनाव पैदा नहीं होगा और होगा भी तो उसका समाधान अभय की शक्ति द्वारा हो जायेगा। उच्चतर चेतना की शक्ति के साथ कार्य करें तो तनाव का कार्य करते हुए तनावमुक्त हो सकते है। खबर देने का उत्तरदायी पत्रकार है और उसके प्रभाव का दायित्व भी पत्रकारों को होना चाहिए। आज खबर बिकने का बाजार हो रहा है और समय में खबरों की परख करके आन्तरिक शक्ति के सहारे अपनी अन्तर्मात्मा की आवाज को सुने और निर्णय करें तो पत्रकारिता नि:संदेश तनावमुक्त हो सकती है।

महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन के सचिव त्रिलोक शर्मा ने कहा कि समाज में और पत्रकारिता मे जो मूल्यों को लेकर जो समस्यायें पैदा हो रही है उसका समाधान कैसे हो इस जिज्ञासा को लेकर सोसायटी ऑफ मीडिया इनिशियेटीव फॉर वैल्यूज का गठन किया गया।मूल रूप से उन मीडियाकर्मियों का

समूह है जो समाज में मूल्यों को लेकर गम्भीर है और उसका हल ढूढ़ने में तत्पर है। सारे समाज के हर तबके के लोगों को जो समस्या और अन्याय से पीड़ित है उसको न्याय दिलाने के लिए आवाज उठाते है। लेकिन हमारे तनाव को समझने के लिए कोई नहीं है। आज छोटे-छोटे कारणों से तनाव पैदा हो रहा है। हमारी सोच, हमारी वृत्ति तनाव को पैदा करने और उसके समाधान का तरीका भी ढूढ़ने में भी सहायक है इस मनन चिन्तन के लिए इस सेमिनार का आयोजन किया गया है।

मीडिया विंग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. शान्तनु ने संस्था तथा मीडिया प्रभाग की गतिविधियों से अवगत कराते हुए कहा कि यह प्रभाग विशेष तौर पर समाज के बीच कार्य कर रहे लोगों के अन्दर स्कील डवलप करने के लिए कार्य कर रही है। लोगों में नैतिक आध्यात्मिक उत्थान, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण, सकारात्मक चिंतन, नशामुक्त जीवन राजयोग पद्यति से कैसे सम्भव है इसके बारे में प्रशिक्षण और ट्रेनिंग कार्यक्रमों का आयोजन करती है। मीडिया कर्मी एक ऐसे सशक्त कलमकार है जो समाज में शान्ति की स्थापना में सकारात्मक कार्य कर सकते है।

ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र, उदयपुर की प्रभारी ब्र. कु. रीटा ने कहा कि तनावमुक्त जीवन बनाने के लिए हमें आन्तरिक विकास, सशक्तिकरण की आवश्यकता है। राजयोग की परिभाषा को रेखांकित करते हुए उन्होंने कुछ क्षणों के लिए राजयोग की अनुभूति करायी।मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के मीडिया प्रोफेसर डा.मनोज लोढा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का संचालन दिल्ली से आये ब्र. कु. सुशान्त ने किया।